श्री तारतम वाणी

विरह के प्रकरण

नित्य पाठ

विरह के प्रकरण

राग सिंधुड़ा

वालो विरह रस भीनों रंग विरहमां रमाड़तो,

वासना रूदन करे जल धार।

आप ओलखावी अलगो थयो अमथी,

जे कोई हुती तामसियों सिरदार।।१।।

कलकली कामनी वदन विलखाविया,

विश्वमां वरतियो हाहाकार।

उदमाद अटपटा अंग थी टालीने,

माननी सहुए मनावियो हार।।२।।

पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो,

न कांई जारवंतियो विना जार।

पात्रियो पिउ थकी अमें जे अभागणियों,

रहियो अंग दाग लगावन हार।।३।।

स्या रे एवा करम करया हता कामनी,

धाम मांहें धणी आगल आधार।

हवे काढ़ो मोहजल थी बूडती कर ग्रही,

कहे महामती मारा भरतार।।४।।

।। प्रकरण ३५ ।।

हांरे वाला रल झलावियो रामतें रोवरावियो,

जुजवे पर्वतों पाड़्या रे पुकार।

रणवगडा मांहें रोई कहे कामनी,

धणी विना धिक धिक आ रे आकार।।१।।

वेदना विखम रस लीधां अमें विरह तणां,

हवे दीन थई कहूं वारंवार।

सुपनमां दुख सहया घणां रासमां,

जागतां दुख न सेहेवाए लगार।।२।।

दंत तरणां लई तारूणी तलफियो,

तमें बाहो दाहो दीन दातार।

खमाए नहीं कठण एवी कसनी,

राखो चरण तले सरण साधार।।३।।

हवे हारया हारया हूं कहूं वार केटली,

राखो रोतियो करो निरमल नार।

कहे महामती मेहेबूब मारा धणी,

आ रे अर्ज रखे हांसीमा उतार।।४।।

।। प्रकरण ३६ ।।

हांरे वाला बंध पड़्या बल हरया तारे फंदड़े,

बंध विना जाए बांधियो हार।

हंसिए रोइए पड़िए पछताइए,

पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार।।१।।

जेहेर चढ़्यो हाथ पांउं झटकतियो,

सरवा अंग साले कोई सके न उतार।

समरथ सुखथाय साथने ततखिण,

गुणवंता गारुडी जेहेर तेहेने तेणी विधें झार।।२।।

माहें धखे दावानल दसो दिसा,

हवे बलण वासनाओं थी निवार।

हुकम मोहथी नजर करो निरमल,

मूल मुखदाखी विरह अंग थी विसार।।३।।

छल मोटे अमने अति छेतरया,

थया हैया झांझरा न सेहेवाए मार।

कहे महामती मारा धणी धामना,

राखो रोतियों सुख देयो ने करार।।४।।

।। प्रकरण ३७ ।।

केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ,

वली वली वाध्यो विख विस्तार।

जीव सिर जुलम कीधो फरी फरी,

हठियो हरामी अंग इंद्री विकार।।१।।

झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी,

सुख सीतल अंग अंगना ने ठार।

बाल्या वली वली ए मन ए कबुधें,

कमसील काम कां कराव्या करतार।।२।।

गुण पख इंद्री वस करी अबलीस ने,

अंगना अंग थाप्यो दई धिकार।

अर्थ उपले एम केहेवाइयो वासना,

फरी एणे वचने दीधी फिटकार।।३।।

मांहेले माएने जोपे ज्यारे जोइए,

त्यारे दीधी तारूणी तन तछकार।

कलकली महामती कहे हो कंथजी,

एवा स्या रे दोष अंगनाओं ना आधार।।४।।

।। प्रकरण ३८ ।।

हांरे वाला कांरे आप्या दुख अमने अनघटतां,

ब्राध लगाडी विध विध ना विकार।

विमुख कीधां रस दई विरह अवला,

साथ सनमुख मांहें थया रे धिकार।।१।।

अनेक रामत बीजी हती अति घणी,

सुपने अग्राह ठेले संसार।

उघड़ी आंख दिन उगते एणे छले,

जागतां जनम रूडा खोया आवार।।२।।

सनमुख तमसूं विरह रस तम तणो,

कां न कीधां जाली बाली अंगार।

त्राहि त्राहि ए वातों थासे घेर साथमां,

सेहेसूं केम दाग जे लाग्या आकार।।३।।

विरह थी विछोडी दुख दीधां विसमां,

अहनिस निस्वासा अंग उठे कटकार।

दुख भंजन सहु विध पिउजी समरथ,

कहे महामती सुख देंण सिणगार।।४।।

।। प्रकरण ३९ ।।

हांरे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारड़े,

विमुख विप्रीत कमर कसी हथियार।

स्वाद चढ़या स्वाम द्रोही संग्रामें,

विकट बंका कीधा अमें आसाधार।।१।।

कुकरम कसाव जुध कई करावियां,

पलीत अबलीस अम मांहें बेसार।

जागतां दिन कई देखतां अमने छेतरया,

खरा ने खराब ए खलक खुआर।।२।।

ओलखी तमने अमें जुध कीधां तमसूं,

मन चित बुध मोह ग्रही अहंकार।

ए विमुख वातों मोटे मेले वंचासे,

मलसे जुथ जहां बारे हजार।।३।।

कहे महामती हूं गांऊं मोहोरे थई,

पण विमुख विधो वीती सहु मांहें नर नार।

धाम मांहें धणी अमें ऊंचूं केम जोईसूं,

पोहोंचसे पवाड़ा परआतम मोंझार।।४।।

।। प्रकरण ४०।।